कर्म योग

अर्जुन उवाच
ज्यायसी चेत् कर्मणस् ते
मता बुद्धिर् जनार्दन ।
तत् किं कर्मणि घोरे मां
नियोजयसि केशव ॥१॥

TRANSLATION

अर्जुन ने कहा – हे जनार्दन, हे केशव! यदि आप बुद्धि को सकाम कर्म से श्रेष्ठ समझते हैं तो फिर आप मुझे इस घोर युद्ध में क्यों लगाना चाहते हैं?

गीता भूषण टीका ३.१

यह तीसरा अध्याय निष्काम कर्म को विस्तार में वर्णित करता है | यहां पर काम को जीतने का मार्ग भी बताया गया है जिस काम को जीतना सामान्यतः बहुत मुश्किल होता है

अर्जुन का सबसे दयालु सारथी भगवान् कृष्ण ने, स्वयं के ज्ञान के माध्यम से पूजा सिखाकर अज्ञानता में घिरे हुए ब्रह्माण्ड का उद्धार करने की इच्छा के साथ , आत्मा के स्वरूप का ज्ञान देकर जो भगवान के ज्ञान का एक भाग है फिर निष्काम कर्म योग सिखाया जिसके द्वारा उस जीव आत्मा का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है |

इस विषय को स्पष्ट करने के लिए अब चार अध्यायों में अलग-अलग विधियों से समझाया गया है। कर्म की निर्देशित बुद्धि से आत्मा की और निर्देशित बुद्धि की श्रेष्ठता को स्थापित किया गया ।। इस सम्बन्ध में अर्जुन अब एक सवाल पूछते हैं ।

यदि आप आत्म की और निर्देशित बुद्धि को निष्काम कर्म निर्देशित बुद्धि से श्रेष्ठ मानते हैं जिसका उद्देश्य आत्म ज्ञान उत्पन्न करना है तो आप

मुझे युद्ध जैसे घोर कर्म में क्यों नियोजित कर रहे हैं जो हिंसा को उत्पन्न करने वाला है ?

आप मुझे युद्ध करने की आज्ञा देने वाले शब्दों से क्यों उकसाते हैं? वह बुद्धि जो आत्मा के बोध को जन्म देती है, इंद्रियों के कार्य से वैराग्य उत्पन्न करती है। उस उद्देश्य के लिए व्यक्ति को इन्द्रिय निग्रह और अन्य साधनों को नियोजित करना चाहिए जो एक ही प्रकृति के हों , न कि

विपरीत क्रियाएं जो सभी इन्द्रियों को नियोजित करती हों |

जनार्दन अर्थात जो श्रेय की इच्छा वालों के द्वारा याचनीय हैं | केशव अर्थात जो ब्रह्मा और शिव को भी नियंत्रण में रखते हैं |

शिव जी भगवान् कृष्ण से हरि वंश में कहते हैं :

क इति ब्रह्मणो नाम ईशो 'हं सर्व-देहिनाम्

आवां तवाङ्ग-सम्भूतौ तस्मात् केशव-नाम-भाक्

क अर्थात ब्रह्मा और **ईश** मुझको (शिव जी) को इंगित करता है जो सभी देहधारियों के स्वामी हैं | हम दोनों आपके शरीर से प्रकट होते हैं इसलिए आप को केशव कहा जाता है |

आपकी आज्ञा की अवहेलना तो कोई भी नहीं कर सकता क्योंकि आप तो ब्रह्मा जी और शिव जी को भी नियमित करने वाले हैं इसलिए हे केशव मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं कि मेरे परम श्रेय के लिए मुझे स्पष्ट रूप से बताइए कि मेरे लिए क्या अच्छा होगा ?

Purport

श्रीभगवान् कृष्ण ने पिछले अध्याय में अपने घनिष्ट मित्र अर्जुन को संसार के शोक-सागर से उबारने के उद्देश्य से आत्मा के स्वरूप का विशद् वर्णन किया है और आत्म-साक्षात्कार के जिस मार्ग की संस्तुति की है वह है – बुद्धियोग या कृष्णभावनामृत | कभी-कभी कृष्णभावनामृत को भूल से जड़ता समझ लिया जाता है और ऐसी भ्रान्त धारणा वाला मनुष्य

भगवान् कृष्ण के नाम-जप द्वारा पूर्णतया कृष्णभावनाभावित होने के लिए प्रायः एकान्त स्थान में चला जाता है | किन्तु कृष्णभावनामृत-दर्शन में प्रशिक्षित हुए बिना एकान्त स्थान में कृष्ण नाम-जप करना ठीक नहीं | इससे अबोध जनता से केवल सस्ती प्रशंसा प्राप्त हो सकेगी | अर्जुन को भी कृष्णभावनामृत या बुद्धियोग ऐसा लगा मानो वह सक्रिय जीवन से संन्यास लेकर एकान्त स्थान में

तपस्या का अभ्यास हो | दूसरे शब्दों में, वह कृष्णभावनामृत को बहाना बनाकर चातुरीपूर्वक युद्ध से जी छुड़ाना चाहता था | किन्तु एकनिष्ठ शिष्य के नाते उसने यह बात अपने गुरु के समक्ष रखी और कृष्ण से सर्वोत्तम कार्य-विधि के विषय में प्रश्न किया | उत्तर में भगवान् ने तृतीय अध्याय में कर्मयोग अर्थात् कृष्णभावनाभावित कर्म की विस्तृत व्याख्या दी |

व्यामिश्रेणैव वाक्येन बुद्धिं
मोहयसीव मे ।
तद् एकं वद निश्चित्य येन श्रेयो
'हम् आप्नुयाम् ॥२॥

TRANSLATION

आपके व्यामिश्रित (अनेकार्थक) उपदेशों से मेरी बुद्धि मोहित हो गई है | अतः कृपा करके निश्चयपूर्वक मुझे बतायें कि इनमें से मेरे लिए सर्वाधिक श्रेयस्कर क्या होगा?

गीता भूषण टीका ३.२

सांख्य-योग और कर्म-योग दोनों की ओर निर्देशित बुद्धि के विषय में, इंद्रियों को संयमित और नियोजित करने के सम्बन्ध में , साधना और साध्य के विषय में कथन को एक मिश्रित कथन (व्यामिश्र) कहा जाता है|

उस कथन से, आप मेरी बुद्धि (***मोहयसीव***) को भ्रमित करते हुए प्रतीत हो रहे हैं | वास्तव में, आप

सभी प्राणियों के स्वामी हैं और मेरे मित्र भी हैं इसलिए आप मुझे भ्रमित नहीं करेंगे। लेकिन मैं, अपनी बुद्धि में दोषों के कारण ऐसा सोचता हूं। यह इव शब्द का निहितार्थ है। इसलिए दो तत्वों के मिश्रण के बिना, एक वक्तव्य दें।

श्रुतियाँ कहती हैं की:

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैकेनामृतत्वम् आनशुर् परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजते यद् यतयो विशन्ति

कर्तव्य सम्पादन से, संतान या धन से नहीं, बल्कि त्याग से, उन्होंने वह अमरता प्राप्त की, जो संन्यासियों को प्राप्त होती है, जो स्वर्ग से परे है और हृदय के भीतर

प्रकाशमान होती है। महानारायण उपनिषद् ८६

नास्त्य् अकृतः कृतेन

वह शाश्वत पुरुष (अकृतः) कार्यों द्वारा प्राप्त नहीं होता है मुण्डक उपनिषद १.२.12

इस कथन के द्वारा मैं सबसे अधिक श्रेय प्रद मार्ग प्राप्त कर सकूंगा जिस पर मैं दृढ़ विश्वास के साथ चल सकता हूं।

Purport

पिछले अध्याय में, भगवद्गीता के उपक्रम के रूप मे सांख्ययोग, बुद्धियोग, बुद्धि द्वारा इन्द्रियनिग्रह, निष्काम कर्मयोग तथा नवदीक्षित की स्थिति जैसे विभिन्न मार्गों का वर्णन किया गया है | किन्तु उसमें तारतम्य नहीं था | कर्म करने तथा समझने के लिए मार्ग की अधिक व्यवस्थित रूपरेखा की आवश्यकता होगी | अतः अर्जुन इन भ्रामक विषयों को

स्पष्ट कर लेना चाहता था, जिससे सामान्य मनुष्य बिना किसी भ्रम के उन्हें स्वीकार कर सके | यद्यपि श्रीकृष्ण वाक्चातुरी से अर्जुन को चकराना नहीं चाहते थे, किन्तु अर्जुन यह नहीं समझ सका कि कृष्णभावनामृत क्या है – जड़ता है या कि सक्रीय सेवा | दूसरे शब्दों में, अपने प्रश्नों से वह उन समस्त शिष्यों के लिए जो भगवद्गीता के रहस्य को

समझना चाहते थे, कृष्णभावनामृत का मार्ग प्रशस्त कर रहा है |